सांध्य दैनिक
4PM
www.4pm.co.in www.facebook.com/4pmnewsnetwork @Editor_Sanjay YouTube @4pm NEWS NETWORK
● वर्षः 7 ● अंकः 335 ● पृष्ठः 8 ● लखनऊ, मंगलवार, 11 जनवरी, 2022
मूल्य ₹ 3/-

मैं इसलिए दुखी नहीं हूं कि तुमने मुझसे झूठ बोला, मैं इसलिए दुखी हूं कि अब मैं तुम पर यकीन नहीं कर सकता।

-फ्रेडरिक नीत्शे

जिद...सच की

प्रियंका गांधी के वादे का... 8 | उत्तराखंड में भी बदले हुए तेवर... 3 | तो भाजपा के हित में लगायी गयी... 7

भाजपा को बड़ा झटका, स्वामी प्रसाद मौर्या ने दिया इस्तीफा

सपा में हो सकते हैं शामिल

» भाजपा सरकार पर लगाया दलितों-पिछड़ों की उपेक्षा का आरोप, राज्यपाल को भेजा त्यागपत्र

» बसपा छोड़कर भाजपा में हुए थे शामिल, कुछ और विधायक छोड़ सकते हैं भाजपा

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

लखनऊ। विधान सभा चुनाव की तारीखों के ऐलान के साथ उत्तर प्रदेश का सियासी पारा चरम पर पहुंच गया है। आज भाजपा को बड़ा झटका देते हुए स्वामी प्रसाद मौर्या ने कैबिनेट मंत्री पद से इस्तीफा दे दिया है। स्वामी प्रसाद मौर्या ने अपना इस्तीफा राज्यपाल आनंदीबेन पटेल को भेज दिया है। बताया जा रहा है कि वह जल्द ही सपा का दामन थाम सकते हैं।

राज्यपाल आनंदीबेन पटेल को भेजे अपने इस्तीफे में स्वामी प्रसाद मौर्या ने कहा कि श्रम एवं सेवायोजन व समन्वय मंत्री के रूप में विपरीत परिस्थितियों व विचारधारा में रहकर बहुत ही मनोयोग के साथ उत्तरदायित्व का निर्वहन किया है किंतु दलितों, पिछड़ों, किसानों बेरोजगार नौजवानों एवं छोटे-लघु एवं मध्यम श्रेणी के व्यापारियों की घोर उपेक्षात्मक रवैये के कारण उत्तर प्रदेश के मंत्रिमंडल से मैं इस्तीफा देता हूं। उन्होंने कहा कि वे एक दो दिन में बताएंगे कि वे किस पार्टी में जाएंगे। हालांकि पिछले कई दिनों से चर्चा चल रही थी स्वामी प्रसाद मौर्या भाजपा को छोड़कर सपा का दामन थाम सकते हैं। बताया जा रहा है कि स्वामी प्रसाद मौर्या से सीधे सपा प्रमुख से बातचीत हुई है। स्वामी प्रसाद मौर्या के इस्तीफे को बीजेपी के लिए बड़ा झटका माना जा रहा है। पिछले चुनाव में भाजपा को सत्ता में पहुंचाने का श्रेय पिछड़ी जातियों को जाता है और इस बार अखिलेश यादव हर हाल में पिछड़ी जातियों को अपने तरफ मोड़ने में लगे हैं। वे पिछड़े नेताओं को अपनी पार्टी में शामिल कराने का अभियान छेड़ रखा है। स्वामी प्रसाद मौर्या ने दावा किया है कि अभी एक दर्जन से अधिक विधायक भाजपा को छोड़ेंगे।

आज छह बजे देखिये ज्वलंत विषय पर चर्चा हमारे यू ट्यूब चैनल 4PM News Network पर

सपा प्रमुख अखिलेश ने किया स्वागत

सपा प्रमुख अखिलेश यादव ने स्वामी प्रसाद मौर्या का स्वागत करते हुए ट्वीट किया है। उन्होंने ट्वीट किया है कि सामाजिक न्याय और समता-समानता की लड़ाई लड़ने वाले लोकप्रिय नेता स्वामी प्रसाद मौर्या जी एवं उनके साथ आने वाले अन्य सभी नेताओं, कार्यकर्ताओं और समर्थकों का सपा में ससम्मान हार्दिक स्वागत एवं अभिनंदन! सामाजिक न्याय का इंक़लाब होगा, बाइस में बदलाव होगा।

दिल्ली में तय होगा यूपी के भाजपा उम्मीदवारों का भविष्य, दिग्गज कर रहे मंथन

» भाजपा कोर कमेटी की बैठक, कई विधायकों का कट सकता है टिकट

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

नई दिल्ली। विधान सभा चुनाव की तारीखों के ऐलान के बाद उत्तर प्रदेश का सियासी पारा अपने चरम पर पहुंच गया है। प्रदेश में सत्ता बरकरार रखने के लिए भाजपा रणनीति बनाने में जुटी है। यूपी के भाजपा उम्मीदवारों का भविष्य तय करने के लिए लखनऊ के बाद अब दिल्ली में दिग्गजों का मंथन शुरू हो गया है। इसके लिए आज भाजपा कोर कमेटी की बैठक चल रही है। माना जा रहा है कि जनता के बीच भाजपा सरकार के आक्रोश को कम करने के लिए शीर्ष नेतृत्व खराब रिकॉर्ड वाले अपने विधायकों का टिकट काट सकती है।

विधान सभा चुनाव के लिए उम्मीदवारों पर चर्चा के लिए दिल्ली स्थित भाजपा मुख्यालय में कोर कमेटी की बैठक हो रही है। इस बैठक में यूपी के सीएम योगी आदित्यनाथ, डिप्टी सीएम केशव प्रसाद मौर्य, यूपी के भाजपा अध्यक्ष स्वतंत्र देव सिंह और सुनील बंसल भी मौजूद हैं। इससे पहले कल लखनऊ में पार्टी मुख्यालय में चुनाव समिति की बैठक हुई थी। बैठक में प्रदेश चुनाव समिति के सामने 58 सीटों के दावेदारों के नाम दिए गए हैं। कहा जा रहा है कि आज दिल्ली में राष्ट्रीय नेतृत्व के साथ इन पैनलों में शामिल नामों पर चर्चा कर 15-16 जनवरी तक प्रत्याशियों की पहली सूची जारी कर दी जाएगी। सूत्रों की मानें तो मौजूदा विधायकों में से तकरीबन 25 फीसदी चेहरे बदले जा सकते हैं। हालांकि इसका फाइनल फैसला भाजपा की केंद्रीय चुनाव समिति की बैठक में होगा। जिन मौजूदा विधायकों ने परफार्म सही नहीं किया, ऐसे विधायकों का टिकट कट सकता है।

धर्म संसद के सवाल पर भड़के केशव मौर्य, माइक फेंका

» बीबीसी का दावा, जबरन डिलीट कराया फुटेज

» रायपुर और हरिद्वार धर्म संसद में हुई थी भड़काऊ बयानबाजी

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

नई दिल्ली। उत्तर प्रदेश के डिप्टी सीएम केशव प्रसाद मौर्य पर बीबीसी हिंदी ने आरोप लगाया कि एक इंटरव्यू के दौरान जब डिप्टी सीएम से धर्म संसद को लेकर सवाल पूछा गया तो वह भड़क गए। उन्होंने इंटरव्यू के बीच में ही माइक उतारकर फेंक दिया और अपने सुरक्षाकर्मियों को बुलाकर इंटरव्यू की फुटेज डिलीट करा दी, जिसे बाद में रिकवर कर लिया गया।

बीबीसी हिंदी को दिए इंटरव्यू में यूपी के

डिप्टी सीएम केशव प्रसाद मौर्य से हरिद्वार और रायपुर में हुई धर्म संसदों पर सवाल पूछा गया था। इसके पहले मौर्य ने कहा था कि धर्माचार्यों को अपने मंच से अपनी बात कहने का अधिकार है। धर्म संसद भाजपा की नहीं थी। संत अपनी बैठक में क्या बात करते हैं ये उनका विषय हैं और जो उनके मंच से उचित बात होती है वही संत कहते हैं।

मायावती और सतीश चंद्र मिश्रा नहीं लड़ेंगे विधान सभा चुनाव

» राष्ट्रीय महासचिव ने किया ऐलान, सरकार बनाने का जताया भरोसा

» सभी 403 विधान सभा सीटों पर पार्टी उतारेगी प्रत्याशी

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

लखनऊ। विधान सभा की तारीख घोषित होने के बाद प्रदेश का सियासी पारा गर्म हो गया है। मायावती के चुनाव लड़ने को

लेकर बसपा ने अपने पत्ते खोल दिए है। पार्टी के राष्ट्रीय महासचिव सतीश चंद्र मिश्रा ने ऐलान किया है कि वे और बसपा प्रमुख विधान सभा का चुनाव नहीं लड़ेंगी।

बसपा के राष्ट्रीय महासचिव सतीश चन्द्र मिश्रा ने कहा कि उत्तर प्रदेश की पूर्व मुख्यमंत्री और बसपा प्रमुख मायावती विधान सभा चुनाव नहीं लड़ेंगी। उन्होंने कहा कि इतना ही नहीं मैं भी विधान सभा के चुनावी मैदान में नहीं उतरूंगा। उन्होंने कहा कि प्रदेश में बसपा के प्रत्याशी 403 सीट पर लड़ेंगे। उनका दावा है कि प्रदेश में न तो सपा सत्ता में आएगी और न भाजपा। प्रदेश में बसपा ही सरकार बनाने जा रही है। जो पार्टी अकेले सभी सीट पर अपने प्रत्याशी उतार रही है, उसकी जीत तय है। उसके नेता तथा कार्यकर्ता बेहद सक्रिय होकर मैदान में डटेंगे।

भाजपा का विकास से कोई मतलब नहीं : अखिलेश

» 2022 का विधानसभा चुनाव लोकतंत्र को बचाने का चुनाव

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

लखनऊ। सपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष अखिलेश यादव ने कहा कि भाजपा का विकास से कोई मतलब नहीं है। वह चुनाव को जटिल बनाने और सरकारी मशीनरी का दुरूपयोग कर चुनाव की निष्पक्षता को प्रभावित करने का प्रयास कर रही है। लोकतंत्र में भाजपा का आचरण हर तरह से अमर्यादित और लोकलाज से परे है। भाजपा ने किसानों, नौजवानों के भविष्य को रौंदने का काम किया है। वह भ्रमजाल फैलाने में माहिर है।

विकास समाजवादी सरकार ने कियाए भाजपा बिना कुछ काम किए अपने झूठे दावे कर रही है। मुख्यमंत्री के पास गिनाने को अपना एक काम नहीं है। उनके रिपोर्ट कार्ड में ध्वस्त कानून व्यवस्था, महिलाओं के साथ दुष्कर्म की बढ़ती घटनाएं, स्वास्थ्य क्षेत्र की बदहाली, शिक्षा में अव्यवस्था, महंगाई और भ्रष्टाचार है। नीति आयोग भाजपा सरकार को कई क्षेत्रों में फिसड्डी घोषित किया है। 2022 का विधानसभा चुनाव लोकतंत्र को बचाने का चुनाव है। संवैधानिक संस्थाओं को भाजपा सरकार ने जानबूझकर कमजोर किया है। पूर्व मुख्यमंत्री अखिलेश यादव ने आरोप लगाया कि भाजपा की रैलियों में सरकारी साधनों का पूरी तरह दुरुपयोग किया गया। सपा अध्यक्ष अखिलेश यादव ने एक चैनल से बातचीत में कहा कि कांग्रेस से गठबंधन भूल थी। अब समान विचारधारा वाले दलों के साथ गठबंधन हुआ है। सभी को साथ लेकर विधानसभा चुनाव जीतेंगे। सपा अध्यक्ष अखिलेश यादव ने स्वीकार किया कि कहा जाता है कि जो नोएडा जाता है, वह चुनाव हार जाता है। इसकी वजह से नोएडा नहीं गए। लेकिन सपा शासनकाल में नोएडा में मेट्रो सहित तमाम परियोजनाएं दी गई हैं।

लाल टोपी से परेशान हो गए हैं भाजपा नेता : मुलायम

समाजवादी पार्टी के संरक्षक मुलायम सिंह यादव ने कहा कि लाल टोपी से भाजपा के तमाम नेता परेशान हो गए हैं। लाल टोपी खतरे की निशानी है। यह व्यवस्था परिवर्तन में अहम योगदान देगी। पार्टी कार्यालय पहुंचे सपा संरक्षक मुलायम सिंह यादव ने कार्यकर्ताओं का हौसला बढ़ाते हुए कहा कि लाल टोपी यूपी के लिए रेड अलर्ट है। उन्होंने कहा कि भाजपा के एक बड़े नेता ने कहा कि समाजवादी पार्टी की लाल टोपी खतरनाक है और लाल टोपी से वे लोग परेशान हो गए हैं।

भाजपा को जनता राधे-राधे कह कर विदा करेगी

सपा अध्यक्ष अखिलेश यादव ने कहा कि श्रीकृष्ण हमारे कुल देवता है। हम सभी की पूजा अर्चना करते हैं। कोई भी देवता एक व्यक्ति का नहीं होता है। उन्होंने कहा कि जनता भाजपा को राधे-राधे कह तक सत्ता से विदा करेगी। उन्होंने कानून व्यवस्थ का जिक्र करते हुए कहा कि एनसीआरबी की रिपोर्ट जनता के सामने रखना चाहिए। उत्तर प्रदेश में महिलाओं पर सबसे ज्यादा अपराध हो रहा है। अपराध करके आईपीएस फरार है। इनामी क्रिकेट खेल रहा है। उन्होंने सजातीय जिलाधिकारियों की नियुक्ति के मामले को उठाते हुए कहा कि भाजपा सरकार के कार्यकाल में हुई अफसरों की तैनाती की सूची देखी जानी चाहिए। खुद के अनुभव के सवाल पर कहा कि अधिकारी किसी का नहीं होगा, यह हर नेता को समझ लेना चाहिए।

मायावती के गृह जिले में बसपा की स्थिति काफी बदहाल

» अपने खोए जनाधार को वापस पाने की चुनौती

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

नई दिल्ली। उत्तर प्रदेश विधानसभा चुनाव 2022 का बिगुल बज चुका है। ऐसे में बहुजन समाज पार्टी का जिक्र होते ही गौतमबुद्ध नगर का नाम स्वत: ही आ जाता है, कारण हम सब जानते हैं कि बसपा सुप्रीमो मायावती यहीं से ताल्लुक रखती हैं। दादरी का बादलपुर गांव उनका पैतृक गांव हैं। जिले की सियासत की बात करें, तो बीते दो दशक में आधे से ज्यादा समय पार्टी का दबदबा रहा है। जेवर विधानसभा में 2002 से 2017 तक बसपा के ही विधायक रहे हैं।

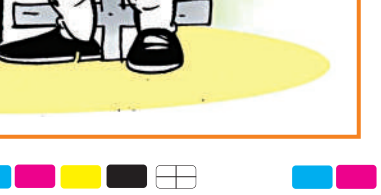

दादरी सीट पर 2007 से 2017 तक लगातार दो बार पार्टी के सतवीर गुर्जर विधायक रहे हैं, लेकिन इसके बाद से सियासी समीकरण पूरी तरह बदल चुके हैं। जिले में सभी सीटों पर भाजपा के विधायक हैं। अब बसपा के सामने अपने खोए जनाधार को वापस पाने की चुनौती है। बहुजन समाज पार्टी ने जेवर से एडवोकेट नरेंद्र भाटी डाढ़ा और दादरी से किसान नेता मनवीर भाटी को मैदान में उतारा है। वहीं, नोएडा विधानसभा में भी काफी हद तक तस्वीर साफ है। यहां से कृपाराम शर्मा को चुनाव लड़ाने की तैयारी है, लेकिन अभी आधिकारिक घोषणा होना बाकी है। उसके बाद ही अंतिम मुहर लगेगी। 2012 में बनी यह सीट बसपा के लिए अछूती रही है। 2012 में पार्टी दूसरे और 2017 में तीसरे स्थान पर थी। दादरी और जेवर विधानसभा में पार्टी का मजबूत वोट बैंक रहा है, लेकिन पिछले चुनावों में मिली हार और कमजोर होते संगठन के बीच अच्छे प्रदर्शन के लिए संगठन को प्रत्याशियों के साथ मजबूती से कदमताल मिलाना होगा।

खराब छवि मौजूदा विधायकों को टिकट नहीं देगी भाजपा

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

लखनऊ। भाजपा विधानसभा चुनाव में खराब छवि वाले मौजूदा विधायकों को टिकट नहीं देगी। वह जिताऊ व टिकाऊ उम्मीदवारों पर ही दांव खेलेगी। कल पार्टी की चुनाव समिति की पहली बैठक में प्रत्याशी चयन पर मंथन किया गया। पहले व दूसरे चरण के कुछ प्रत्याशियों की सूची इसी सप्ताह जारी की जाएगी। भाजपा के प्रदेश अध्यक्ष स्वतंत्र देव सिंह की अध्यक्षता और मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ की मौजूदगी में पार्टी मुख्यालय में हुई बैठक में प्रदेश महामंत्री संगठन सुनील बंसल ने चुनाव प्रचार की रणनीति प्रस्तुत की। उन्होंने कहा कि निर्वाचन आयोग की कोविड गाइडलाइन के तहत डोर टू डोर प्रचार किया जाएगा। पार्टी बड़े नेताओं की डिजिटल सभा और रैली करेगी। इसके लिए बूथ स्तर तक तैयारी है। बैठक में तय किया गया कि पार्टी चरणवार प्रत्याशी घोषित करेगी।

जिताऊ व टिकाऊ उम्मीदवारों पर ही दांव खेलेगी

कांग्रेस के कारनामों और भाजपा के कामों के बीच मुकाबला : धामी

» केंद्र और राज्य की सरकार ने मिलकर विकास का मजबूत खाका खींचा

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

देहरादून। उत्तराखंड के मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी ने कहा है कि लोकतंत्र के महापर्व में कांग्रेस के कारनामों और भाजपा के कार्यों के बीच मुकाबला होगा। उन्होंने अपनी सरकार की उपलब्धियां गिनाते हुए कांग्रेस पर निशाना साधा। उन्होंने कहा कि कांग्रेस और करप्शन एक-दूसरे के पूरक हैं।

मुख्यमंत्री ने कहा कि वह भाजपा की जीत के प्रति आश्वस्त हैं। 2014 से लेकर अब तक और 2017 से लेकर 2022 तक केंद्र की मोदी सरकार ने करीब एक लाख करोड़ से अधिक की योजनाएं उत्तराखंड के लिए स्वीकृत की हैं। उनमें से कई पूरी हो चुकी हैं। कई पर काम चल रहा है। प्रधानमंत्री ने देहरादून और हल्द्वानी में बारी-बारी से उत्तराखंड को 18 हजार करोड़, 17.5 हजार करोड़ की सौगात दी। उन्होंने कहा कि सड़कों का नेटवर्क हो या दिल्ली से देहरादून के बीच की दूरी, केंद्र और राज्य की सरकार ने मिलकर विकास का मजबूत खाका खींचा है। उन्होंने कहा कि कांग्रेस और करप्शन एक दूसरे के पूरक हैं। उनके काले और खूनी पंजे को जनता जरूर सबक सिखाएगी। उन्होंने कांग्रेस को आड़े हाथ लेते हुए कहा कि इस बार कांग्रेस के कारनामों और हमारी सरकार के कामों के बीच मुकाबला होगा। हमारी पार्टी चुनाव आयोग की सभी गाइडलाइंस का पालन करेगी। 2025 में रजत जयंती वर्ष तक निश्चित तौर पर वह उत्तराखंड को देश का सर्वश्रेष्ठ प्रदेश बनाने की दिशा में आगे बढ़ रहे हैं। उन्होंने कहा कि आयुष्मान भारत योजना हो या गरीब कल्याण योजना, भाजपा की सरकार ने अंतिम छोर तक इनका लाभ पहुंचाने पर फोकस किया है।

बामुलाहिजा

कार्टून: हसन जैदी

उत्तराखंड सचिवालय में हुआ धन का खुला खेल : हरीश रावत

» पूर्व सीएम बोले, चुनाव आयोग के आदेशों का उल्लंघन

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

लखनऊ। उत्तराखंड के पूर्व मुख्यमंत्री और कांग्रेस चुनाव अभियान समिति के अध्यक्ष हरीश रावत ने भाजपा सरकार पर कई गंभीर आरोप लगाए हैं। उन्होंने कहा कि आखिरी समय में राज्य सचिवालय में धन का खुला खेल हुआ है। ट्रांसफर-पोस्टिंग में करोड़ों के वारे न्यारे किए गए। चुनाव आयोग के आदेशों का शर्मनाक तरीके से उल्लंघन किया गया। कहा कि सचिवालय में धन का जो खेल हुआ है, भ्रष्टाचार के कारण उससे आसपास का वातारण भी दूषित हो गया है।

कांग्रेस मुख्यालय में प्रेववार्ता को संबोधित करते हुए पूर्व सीएम हरीश रावत ने कहा कि राज्य में चुनाव की घोषणा के बाद आबकारी विभाग में एक आदेश निकाला गया, जिसके जरिए करोड़ों रुपए का खेल हुआ। यह आदेश उच्च क्वालिटी की मदिरा को लेकर था, जिसके लिए आबकारी कमिश्नर तक को बदल दिया गया। आबकारी के अलावा शिक्षा, स्वास्थ्य और सहकारिता में चहेतों को बैक डोर से पोस्टिंग दी गई। शिक्षा विभाग में शर्मनाक तरीके से छुट्टी वाले दिन कार्यालय खुलवाकर छह सौ से अधिक आदेश निकले गए, इनकी संख्या ज्यादा भी हो सकती है। रावत ने कहा कि कांग्रेस ने चुनाव आयोग को ऐसे विभागों की लिस्ट भेजकर शिकायत दर्ज करा दी है। हरीश रावत ने कहा सरकार ने आनन-फानन में सांविधानिक पदों पर जो राजनीतिक नियुक्तियां की हैं, कांग्रेस के सत्ता में लौटने पर सबको रद्द करने के साथ इनकी जांच कराई जाएगी। इस जांच में जो भी अधिकारी दोषी पाए जाएंगे, उनके विरुद्ध नियमानुसार कार्रवाई की जाएगी।

आखिरी समय में बड़े पैमाने पर राजनीतिक नियुक्तियां

रावत का आरोप है कि सरकार ने आखिरी समय में बड़े पैमाने पर राजनीतिक नियुक्तियां की हैं। इनकी प्रेस रिलीज और पोस्टर आचार संहिता लागू हो जाने के बाद बाहर आ रहे हैं। स्पष्ट है कि राज्य में चुनाव आचार संहिता लागू हो जाने के बाद यह नियुक्तियां की गई हैं, जो चुनाव आयोग के नियमों का खुला उल्लंघन है। ऐसा करके सरकार किसकी आंखों में धूल झोंक रही है। उन्होंने चुनाव आयोग से मांग की कि ऐसी सभी फाइलों को सीज किया जाए और नियुक्तियों को रद्द किया जाए। जिन अधिकारियों ने ऐसे आदेश जारी किए हैं, उनके ऊपर चुनाव आयोग नियमों के अनुसार कार्रवाई करे।

उत्तराखंड में भी बदले हुए तेवर के साथ चुनाव में उतर रही सपा

सपा ने यूपी की तरह उत्तराखंड के चुनावों के लिए नई हवा है नई सपा है का दिया नारा

» कुमाऊं में चुनाव लड़ना चाहती है सपा

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

लखनऊ। उत्तर प्रदेश से अलग होकर बने उत्तराखंड के सियासी पहाड़ियों पर समाजवादी पार्टी की साइकिल कभी नहीं चढ़ सकी। दो दशक में चार विधान सभा चुनाव में हर बार समाजवादी पार्टी ने कोशिश की लेकिन पार्टी एक बार भी अपना खाता नहीं खोल सकी। ऐसे में 2022 के उत्तराखंड चुनाव में सपा ने कुमांऊ के मैदानी क्षेत्र वाली सीटों पर किस्मत आजमाने का फैसला किया है जबकि गढ़वाल इलाके की सीटें सहयोगी दलों के लिए छोड़ दिया है।

उत्तराखंड में भी सपा बदले हुए तेवर के साथ चुनाव में उतर रही है। सपा ने यूपी की तरह उत्तराखंड के चुनावों के लिए नई हवा है नई सपा है का नारा दिया है। उत्तराखंड क्रांति दल डेमोक्रेटिक का सपा में विलय हो गया है, जिसके चलते कुमाऊं मंडल की सभी 29 सीटों पर सपा खुद चुनाव लड़ने का फैसला लिया है। कुमाऊं के हरिद्वार, देहरादून और उधम सिंह नगर की सभी सीटों पर सपा अपने प्रत्याशी मैदान में उतारेगी। वहीं, गढ़वाल मंडल की शेष सीटों पर सपा समान विचारधारा वाले दलों से गठबंधन की संभावना भी तलाश रही है। कुमाऊं क्षेत्र का बड़ा हिस्सा मैदान है और यूपी से लगा हुआ है, जिसके चलते उसे उम्मीद है कि इस बार उसका खाता खुल सकता है। इसके बाद भी एक सवाल है कि सपा की साइकिल उत्तराखंड के पहाड़ों पर क्यों नहीं चढ़ पाती है। उत्तराखंड के 21 साल के

जातीय-धार्मिक समीकरण

उत्तराखंड में सपा के सियासी आधार मजबूत न होने के पीछे यहां का जातीय और धार्मिक समीकरण भी है। सपा का यूपी में परंपरागत वोटर यादव और मुस्लिम माना जाता है। उत्तराखंड में यादव समाज का कोई खास आधार नहीं है जबकि मुस्लिम 13 फीसदी है। हालांकि मुस्लिम दो तीन मैदानी जिलों में ही सीमित हैं और पहाड़ों में आबादी न के बराबर है। उत्तराखंड में मुस्लिम वोटर कांग्रेस के साथ है, जिसके चलते सपा अपना सियासी आधार मजबूत नहीं कर सकी। इसके बावजूद सपा सूबे में किस्मत आजमाती रही है और एक बार फिर से चुनावी मैदान में ताल ठोक रही हैं। इस बार कुमांऊ के मैदान से चुनाव लड़कर पहाड़ पर चढ़ने की कवायद में है लेकिन क्या उसे राजनीतिक कामयाबी मिल सकेगी?

सियासी इतिहास में सपा का कोई खास जनाधार नहीं है। राज्य गठन के बाद उत्तराखंड में 2004 के लोक सभा चुनाव में सपा ने हरिद्वार से जीत दर्ज की थी, जिसमें राजेंद्र बॉडी सपा कोटे से सांसद बने। यह पहला चुनाव था, जिसमें समाजवादी पार्टी ने उत्तर प्रदेश से अलग होकर उत्तराखंड में जीत दर्ज कराई थी लेकिन, उसके बाद न तो लोक सभा चुनाव और न ही किसी विधान सभा चुनाव में सपा का खाता खुल पाया। हालांकि उत्तराखंड के पहले और 2002 के विधान सभा चुनाव में कई सीटों पर सपा की जीत का अंतर मामूली रहा लेकिन 21 सालों में आज तक एक भी विधायक सपा का विधान सभा तक नहीं पहुंचा। 2002 में समाजवादी पार्टी को 7.89 फीसदी के करीब वोट मिले थे। इन चुनाव में सपा ने 56 सीटों पर चुनाव लड़ा लेकिन इसके बाद से लगातार पार्टी का सियासी ग्राफ नहीं ही गिरा है।

गिरता गया सपा का ग्राफ

2007 के विधानसभा चुनाव में सपा 42 सीटों पर लड़ी और वोट खिसकर 6.5 के करीब आ गया। 2012 आते-आते सपा का ये ग्राफ गिरता गया और 1.5 फीसदी पर आ गया और सिर्फ 32 सीटों पर चुनाव लड़ सके। 2017 के चुनाव में उत्तर प्रदेश में हुए सपा के घमासान का असर उत्तराखंड में इस कदर देखने को मिला कि सपा 18 सीटों पर ही चुनाव लड़ पाई और वोट प्रतिशत न के बराबर रह गया। सपा के उत्तराखंड में लगातार गिरते सियासी ग्राफ और पार्टी का खाता न खुलने की कई वजह भी हैं, जिनमें लीडरशिप की कमी से लेकर पार्टी के जातीय और धार्मिक समीकरण तक सपा के पक्ष में नहीं है। इसके अलावा रामपुर कांड ऐसा सपा के दामन पर दाग है, जो अभी तक धुल नहीं सका, उत्तराखंड के लोग अभी तक रामपुर कांड को भूले नहीं है।

लीडरशिप की कमी

उत्तराखंड में सपा की साइकिल पहाड़ न चढ़ने की वजह लीडरशिप की कमी भी रही है। उत्तर प्रदेश की तरह उत्तराखंड में सपा का न तो संगठन है और न ही मजबूती लीडरशिप है। उत्तराखंड में ऐसी कोई लीडरशिप सपा ने खड़ी नहीं की, जो पार्टी को स्थिति में मजबूत कर सके। इसके अलावा लगातार पार्टी ने यह भी कोशिश नहीं की कि अपने जनाधार को किस तरह वापस लाया जाए।

मिशन यूपी : चुनाव प्रचार को भाजपा ने कसी कमर, उतारी डिजिटल आर्मी

» डिजिटल कैंपेन के लिए पार्टी ने बनायी आक्रामक रणनीति

» कोरोना के बीच चुनाव को देखते हुए वचुर्अल प्रचार का प्लान

» सोशल मीडिया के 9000 से अधिक वालंटियर्स तैयार

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

लखनऊ। विधान सभा चुनाव की तारीखों के ऐलान के साथ भाजपा ने प्रदेश में सत्ता को बरकरार रखने के लिए कमर कस ली है। रैली और रोड शो पर अस्थायी प्रतिबंध और कोरोना के संक्रमण को देखते हुए भाजपा ने अपनी सोशल मीडिया की भारी-भरकम टीम चुनाव प्रचार के लिए उतार दी है।

कोरोना की तीसरी लहर को देखते हुए 15 जनवरी तक रैलियों, पदयात्राओं, रोड शो और नुक्कड़ सभाओं पर प्रतिबंध भी लगाया गया है। हालांकि जिस तरह से रोजाना संक्रमण के मामले बढ़ रहे हैं उसे

देखते हुए कयास लगाए जा रहे है कि शायद ही इस बार फिजिकल रैलियों की अनुमति आयोग दे। लिहाजा भाजपा डिजिटल कैंपेन को लेकर कमर कस चुकी है। डिजिटल कैंपेन की दौड़ में भाजपा सबसे आगे खड़ी नजर आ रही है। चुनाव का बिगुल बजते ही भाजपा की भारी भरकम सोशल आर्मी ने मोर्चा संभाल लिया है। भाजपा डिजिटल सेल का पूरा ध्यान व्हाट्सएप ग्रुप से प्रचार का है। यही वजह है कि मतदाताओं तक पहुंचने के लिए पार्टी ने बूथ स्तर पर एक लाख से ज्यादा ग्रुप बनाए हैं। अब इन्हीं व्हाट्सऐप ग्रुप के माध्यम से प्रचार सामग्री को जनता तक भेजा जाएगा। इसके अलावा ही 100 से अधिक फेसबुक पेज बनाए गए हैं, जहां से सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म पर योगी सरकार के काम काज को अधिक से अधिक लोगों तक पहुंचाने और विरोधियों को जवाब देने का काम किया जाएगा। पार्टी के पदाधिकारी के मुताबिक सोशल मीडिया के 9000 से अधिक वालंटियर्स को तैयार किया गया है।

पार्टी वर्चुअल और डिजिटल कैंपेन में शिफ्ट करने के लिए तैयार है। बिहार में पार्टी इसका सफल प्रयोग भी कर चुकी है। बिहार चुनाव के तर्ज पर ही इस बार एलईडी स्क्रीन्स का भी सहारा लिया जाएगा। बूथ स्तर तक एलईडी स्क्रीन्स के सहारे मतदाताओं को रिझाने की कोशिश होगी। इसके अलावा घर-घर जाकर प्रचार करने की रणनीति भी बनायी गयी है। इसके लिए कार्यकर्ताओं को लगाया गया है।

टिकट के दावेदारों ने लखनऊ में डाला डेरा

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

लखनऊ। चुनावी मैदान में उतरने से पहले टिकट पाने की गर्माहट दिखने लगी है। चुनावी घोषणा होने के बाद पार्टी के प्रदेश कार्यालय के बाहर चुनावी माहौल नजर आने लगा है। हाथ में बायोडाटा और समर्थकों के साथ दावेदार नजर आ रहे है। हर वाहन की नेम प्लेट पर अलग-अलग सीरीज के नंबर ही बता रहे है कि किस-किस जिलों से यहां टिकट पाने की उम्मीदें जुटी हैं। वाहन पर लगे पोस्टर और स्टिकर भी बता रहे हैं कि कौन किस विधान सभा से दावेदारी कर रहा है। किसी वाहन पर ब्लाक प्रमुख तो किसी पर पूर्व ब्लाक प्रमुख। विधायक और पूर्व विधायक के साथ ही पार्टी पदाधिकारी का पदनाम भी लिखा था। महिला दावेदार भी उम्मीद लिए नजर आ रही हैं। विधान सभा मार्ग पर भाजपा मुख्यालय के दोनों गेट

पर वाहनों का जमावड़ा लगा है और कुछ मुख्यालय परिसर में तो कुछ बाहर खड़े होकर बड़े नेताओं का इंतजार करते दिख रहे हैं। भाजपा मुख्यालय परिसर में कोरोना का डर भी दिख रहा है और कुछ खास चेहरे ही नजर आ रहे हैं। हर किसी के साथ दो चार कार्यकर्ता भी थे, जिसमें किसी न किसी के हाथ में संभावित उम्मीदवार का बायोडाटा भी था। पार्टी के एक पदाधिकारी के कोरोना होने की सूचना से हर कोई कुछ समय रहने के बाद निकल जा रहा था, वैसे संभावित दावेदारों के आने जाने का दौर जारी है।

जिद... सच की

Sanjay Sharma
editor.sanjaysharma
@Editor_Sanjay

पाबंदियों का दौर अर्थव्यवस्था को चोट

सवाल यह है कि क्या कोरोना की तीसरी लहर एक बार फिर अर्थव्यवस्था को पटरी से उतार देगी? क्या लोगों के रोजी-रोजगार पर फिर संकट मंडराने लगा है? क्या पाबंदियां पर्यटन और अन्य उद्योगों को घुटनों पर नहीं ला देंगी? आखिर तमाम हिदायतों के बावजूद कोरोना की तीसरी लहर को रोका क्यों नहीं जा सका?

एक बार फिर कोरोना ने पूरी दुनिया में कोहराम मचा दिया है। भारत में तीसरी लहर शुरू हो गयी है। डेल्टा और ओमिक्रॉन की बढ़ती रफ्तार ने केंद्र और राज्य सरकारों की सांसें फूला दी हैं। केंद्र ने राज्यों को अस्पताल तैयार रखने के निर्देश जारी कर दिए हैं। पिछले दो दिनों से डेढ़ लाख से अधिक केस रोजाना सामने आ रहे हैं। लिहाजा, पाबंदियां भी लगातार कड़ी होती जा रही हैं। कहीं वीकेंड कर्फ्यू लगाया जा रहा है तो कहीं नाइट कर्फ्यू की अवधि को बढ़ा दिया है। इसके कारण बाजार की हालत डांवाडोल होती नजर आने लगी है। सवाल यह है कि क्या कोरोना की तीसरी लहर एक बार फिर अर्थव्यवस्था को पटरी से उतार देगी? क्या लोगों के रोजी-रोजगार पर फिर संकट मंडराने लगा है? क्या पाबंदियां पर्यटन और अन्य उद्योगों को घुटनों पर नहीं ला देंगी? आखिर तमाम हिदायतों के बावजूद कोरोना की तीसरी लहर को रोका क्यों नहीं जा सका? क्या लोगों की लापरवाही ने हालात को बदतर बना दिया है?

पहली और दूसरी लहर के बाद जैसे ही देश की अर्थव्यवस्था पटरी पर आती दिखी कोरोना की तीसरी लहर ने दस्तक दे दिया है। इस लहर में डेल्टा और ओमिक्रॉन दोनों ही वेरिएंट के केस मिल रहे हैं और पिछली लहर के मुकाबले इस बार बेहद तेजी से संक्रमण फैल रहा है। हालांकि विशेषज्ञों ने इसको कम घातक बताया है। बावजूद इसके संक्रमण तेजी से बढ़ने के कारण दिल्ली, यूपी और महाराष्ट्र समेत तमाम राज्यों में पाबंदियां लगातार कड़ी की जा रही है। पहाड़ी राज्यों में पाबंदियों के कारण पर्यटन व्यापार पर तेजी से असर पड़ रहा है। लोग तेजी से रेल टिकटों को कैंसिल कर रहे हैं। घूमने-फिरने का प्लान लोगों ने रोक दिया है। नाइट कर्फ्यू के कारण बाजार पर भी असर दिखने लगा है। सब्जियों से लेकर खाद्य पदार्थों तक महंगे होने लगे हैं। स्कूलों को फिलहाल बंद कर दिया गया है। हालांकि राज्य सरकारें लॉकडाउन नहीं लगाने की बात कर रही हैं लेकिन ऐसा वे कब तक कर पाएंगी, कहा नहीं जा सकता है। हकीकत यह है कि दूसरी लहर वाली स्थितियां फिर पैदा हो गयी हैं और लोगों में दहशत का माहौल दिखाई पड़ रहा है। इसमें दो राय नहीं है कि इस स्थिति के लिए राज्य सरकारें और लोगों की लापरवाही जिम्मेदार है। विशेषज्ञों की चेतावनी के बावजूद लोगों ने कोरोना प्रोटोकॉल का पालन नहीं किया वहीं राज्य सरकारें इसको लेकर गंभीर नहीं दिखी। लिहाजा संक्रमण बेहद तेजी से फैल रहा है। यही नहीं टीकाकरण की रफ्तार भी धीमी चल रही है। जाहिर है जिस तरह के हालात नजर आ रहे हैं वे बेहद गंभीर हैं और अर्थव्यवस्था को एक बार फिर बड़ी चोट लगती दिख रही है।

(इस लेख पर आप अपनी राय 9559286005 पर एसएमएस या info@4pm.co.in पर ई-मेल भी कर सकते हैं)

बठिंडा से उठा बवाल बवंडर नहीं बन पाया!

श्रवण गर्ग

देश के आम नागरिकों को कुछ भी सूझ नहीं पड़ रही है कि कोरोना की नई लहर में अपनी स्वयं की रक्षा की कोशिशों के बीच वे प्रधानमंत्री के पंजाब दौरे के दौरान उनके सुरक्षा इंतज़ामों में हुई चूक को लेकर किस तरह से प्रतिक्रिया व्यक्त करें । घटना निश्चित ही काफ़ी गम्भीर रही होगी क्योंकि प्रधानमंत्री का पंजाब के अफ़सरों को कथित तौर पर यह कहना कि 'अपने सी एम को थैंक्स कहना कि मैं बठिंडा एयरपोर्ट तक जिंदा लौट पाया, काफ़ी मायने रखता है। नरेंद्र मोदी को उनके गुजरात और दिल्ली के बीस साल के शासनकाल के दौरान इस तरह से 'ऑन-द-स्पॉट' नाराज़गी ज़ाहिर करते हुए पहले कभी देखा या सुना नहीं गया। यह भी तय है कि इस तरह की किसी चूक की कल्पना भाजपा के शासन वाले राज्य में क़तई नहीं की जा सकती।

प्रधानमंत्री की सलामती के लिए महामृत्युंजय मंत्र के जाप और पूजा पाठ में जुटे मुख्यमंत्री और अन्य नेता इस बात से शायद परेशान होंगे कि पंजाब की घटना को लेकर लोग सामूहिक रूप से विलाप क्यों नहीं कर रहे हैं । बठिंडा एयरपोर्ट की घटना के ब्यौरे जब विस्तार से जारी हुए (या करवाए गए) तब चुनावी तैयारियों में जुटे सत्तारूढ़ दल के नेताओं को उसके सहानुभूति की लहर में तब्दील हो जाने की उम्मीदें रहीं होंगी पर वैसा नहीं हुआ। इसमें दो मत नहीं कि प्रधानमंत्री के कद के व्यक्ति की सुरक्षा व्यवस्था में जो चूक हुई है वह चिंताजनक है। इस तरह की चूकों का असली खामियाजा भी अफसरों को ही भुगतना पड़ता है। ममता बनर्जी और चरणजीत सिंह चन्नी में जितना फर्क है उतना तो ये अफसर भुगतने भी वाले हैं। यह कहना कठिन है कि बठिंडा की घटना का राजनीतिक असर पंजाब विधान सभा के चुनाव परिणामों पर या भाजपा और कैप्टन अमरिंदर सिंह के पक्ष में कितना पड़ेगा। भाजपा को फायदे के बजाय नुकसान भी हो सकता है। प्रधानमंत्री के फिरोजपुर के हुसैनीवाला से बगैर रैली किए दिल्ली वापस लौट आने का परिणाम यह भी हो सकता है कि नवजोत सिंह सिद्धू की मंशा के विपरीत चन्नी और ज्यादा मजबूती के साथ चंडीगढ़ स्थित विधान सभा में लौट आएं।

चुनाव परिणामों की बात को फिलहाल छोड़ दें तो बठिंडा एयरपोर्ट पर जो भी हुआ उससे कुछ दूसरे सवाल भी उपजते हैं। पहला यह कि किसी भी जीते-जागते लोकतंत्र में उस देश के मतदाताओं/नागरिकों द्वारा अपनी मांगों को लेकर किए जाने वाले शांतिपूर्ण विरोध-प्रदर्शनों को देश के अतिमहत्वपूर्ण व्यक्तियों की जान पर खतरे की आशंका से जोड़कर देखना अथवा प्रचारित करना प्रजातांत्रिक मूल्यों और व्यवस्थाओं में किस सीमा तक उचित समझा जाना चाहिए? क्या दुनिया की अन्य लोकतांत्रिक व्यवस्थाओं में भी हमारी तरह का ही सोच कायम है ? दूसरा यह कि सुरक्षा व्यवस्था में चूक इसके अनुभव के बाद क्या प्रधानमंत्री पंजाब की किसी अन्य चुनावी सभा या कार्यक्रम में सड़क मार्ग से भाग लेना बंद कर देंगे ? अगर अपनी मांगों को लेकर किसान असंतुष्ट हैं तो संभव है कि बठिंडा के फ़्लाईओवर जैसे प्रदर्शनों का सिलसिला कभी बंद ही न हो।

नाराज तो पश्चिमी उत्तर प्रदेश के जाट-मुसलिम किसान भी हैं। तो क्या प्रधानमंत्री, मुख्यमंत्री और अन्य बड़े नेता इस क्षेत्र का चुनावी दौरा नहीं करेंगे ? पश्चिमी उत्तर प्रदेश ही नहीं, पूर्वांचल भी किसानों की नाराजगी के दौर से गुजर रहा है जबकि वहां इस तरह का कोई आंदोलन ही नहीं है। सवाल यह भी बनता है कि किसी भी विशिष्ट अथवा अतिविशिष्ट व्यक्ति की सुरक्षा-व्यवस्था को भेद पाने की एक ऐसे संवेदनशील सीमावर्ती क्षेत्र में कोई कैसे हिम्मत कर सकता है जो हमारे जांबाज सैनिकों की नजरों में चौबीसों घंटे कैद रहता है ? घटनास्थल पाक सीमा से सिर्फ तेईस किलोमीटर दूर बताया गया है। जिस फ्लाईओवर का जिक्र घटना के संदर्भ में किया जा रहा है वहां प्रधानमंत्री को पंद्रह से बीस मिनट रुकना पड़ा था। भारतीय वायु सेना के बहादुर जवान तो पांच मिनिट से कम समय में अपना रक्षा कवच वहां खड़ा कर सकते हैं। प्रदर्शनकारी तो क्या कोई परिंदा भी प्रधानमंत्री के काफिले तक पहुंचने की हिम्मत नहीं कर सकता था। इतना ही नहीं ! एस पी जी (स्पेशल प्रोटेक्शन ग्रुप) के विशेष तौर पर प्रशिक्षित कोई तीन हजार जवानों के जिम्मे केवल एक ही काम है। वह यह कि केवल एक व्यक्ति यानी प्रधानमंत्री को सुरक्षा प्रदान करना। एसपीजी का सालाना बजट छह सौ करोड़ से अधिक का बताया जाता है। जांच का असली विषय तो यह होना चाहिए कि सोशल मीडिया पर प्रसारित हो रहे तमाम वीडियो में भाजपा के जिन कार्यकर्ताओं को प्रधानमंत्री के काफिले के नजदीक उनकी जय-जयकार करते हुए दिखाया जा रहा है वे वहां तक कैसे पहुंच पाए। पंजाब के अफसरों को प्रधानमंत्री ने जो भी कहा होगा उसकी आधिकारिक पुष्टि होना अभी बाकी है। हो सकता है कि इस संबंध में प्रधानमंत्री के कुछ बोलने तक वह पुष्टि न भी हो। अभी तो एक संवाद एजेंसी द्वारा जारी खबर पर ही सारा बवाल मचा हुआ है। मोदी की दिल्ली वापसी के बाद का घटनाक्रम भी यहीं तक सीमित है कि उन्होंने राष्ट्रपति से मुलाक़ात की। घटना की जांच के बिंदुओं में भी सुरक्षा व्यवस्था में चूक ही शामिल है। केंद्रीय गृह मंत्रालय ने बठिंडा के पुलिस प्रमुख व पांच अन्य वरिष्ठ अधिकारियों से इसी बाबत जवाब-तलब किया है। संवाद एजेंसी के समाचार को अगर (खंडन जारी होने तक) सही मान लिया जाए तब भी प्रधानमंत्री की 'त्वरित टिप्पणी' को एक 'ओवर-रिएक्शन' मानते हुए नागरिकों द्वारा घटना पर ज्यादा चिंता प्रकट नहीं करने को उचित ठहराया जा सकता है। चुनावों के ऐन पहले इस तरह की 'ऑन-द-स्पॉट' टिप्पणियों को परिणामों को लेकर सत्तारूढ़ दल की उहापोह के साथ जोड़कर भी देखा जा सकता है। इन उहापोह में यह आशंका भी शामिल की जा सकती है कि घटना का कोई चुनावी लाभ तो प्राप्त नहीं हो उलटे एक और अल्पसंख्यक समुदाय सत्तारूढ़ दल से अब पूरी तरह ही दूर छिटक जाए। आंदोलनकारियों के संगठन 'संयुक्त किसान मोर्चा' ने प्रधानमंत्री की जान को खतरे सम्बन्धी लगाए गए आरोपों को पंजाब की जनता और आंदोलन का अपमान बताते हुए कहा है कि असली खतरा तो उनकी (किसानों की) जानों को अजय मिश्रा टेनी जैसे 'अपराधियों' से है जो केंद्र में मंत्री भी बने हुए हैं और खुले आम घूम भी रहे हैं। सुरक्षा इंतजामों को लेकर प्रधानमंत्री के कथित तौर पर 'आपा खो देने' को यही मानते हुए स्वीकार कर लिया जाना चाहिए कि मोदी इस समय दोहरे दबाव में हैं, एक तरफ उन्हें उत्तर प्रदेश और तीन अन्य राज्यों (उत्तराखंड, गोवा और मणिपुर) में अपनी पार्टी की सरकारें बचानी है और पंजाब को कांग्रेस से मुक्त कराना है दूसरी तरफ उन्हें कोरोना के ताजा प्रकोप से नागरिकों की जानें सुरक्षित करना है। उनकी बाकी समस्याएँ अपनी जगह पूर्ववत क़ायम हैं ही। चुनाव की तारीखों का ऐलान हो चुका है । अतः बठिंडा एपिसोड को मतदान संपन्न हो जाने तक भुला दिया जाना चाहिए ।

ओमिक्रॉन को रोकने के हों उपाय

टी जैकब जॉन

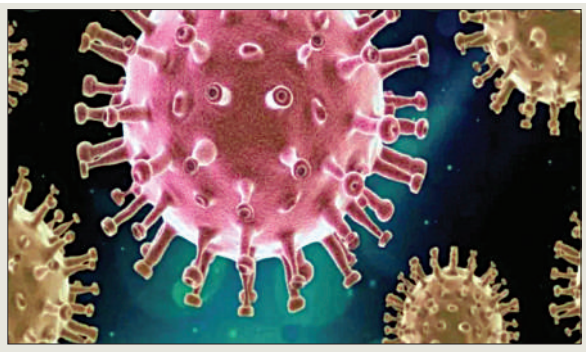

कोरोना वायरस के नये वैरिएंट ओमिक्रॉन के फैलने की स्थिति में जो सुस्त प्रशासनिक रवैया रहा है, उससे देश को चिंतित होना चाहिए। वास्तव में यह निष्क्रियता जैसा है, मानो वायरस को अपनी मनमानी करने की पूरी छूट दे दी गयी हो। यह इसलिए भी बड़े अचरज की बात है क्योंकि भारत के पास महामारी की पहली और दूसरी लहर में भयावह स्थितियों का सामना करने का अनुभव है। विश्व स्वास्थ्य संगठन ने 26 नवंबर, 2021 को जारी महामारी के बीच ओमिक्रॉन को चिंताजनक वैरिएंट घोषित कर दिया था। यह चेतावनी जारी करने से दो दिन पहले ही संगठन को दक्षिण अफ्रीका से इस वैरिएंट की जानकारी मिली थी। दक्षिण अफ्रीका के वैज्ञानिकों ने इस वायरस के दो घातक प्रारंभिक लक्षणों के बारे में बताया था- एक, इसकी संक्रामक क्षमता डेल्टा वैरिएंट से अधिक है और दूसरा, इसमें अन्य वैरिएंट के संक्रमण के बाद आयी या स्थानीय वैक्सीन की खुराक से प्राप्त प्रतिरोधक क्षमता को चकमा देने की शक्ति है।

स्वास्थ्य संगठन द्वारा तुरंत निर्णय लिया जाना 'सबूत आधारित फैसला' लेने की प्रक्रिया और भावना का एक उदाहरण है। जल्द फैसला लेना बहुत अहम था और मौजूद सबूतों को पर्याप्त माना गया। जब किसी समस्या की आशंका पैदा होती है, तब या तो तत्काल कोई फैसला नहीं लिया जाता या उसे अन्य सबूतों के आने तक टाल दिया जाता है या किसी शर्त के साथ निर्णय लिया जाता है या फिर तुरंत कोई ठोस फैसला कर लिया जाता है। इस मामले में सबूत ही एकमात्र कारक नहीं थे, बल्कि देरी के उल्टे असर का भी संज्ञान लिया गया। हम सबूतों के पर्याप्त होने या न होने पर सहमत या असहमत हो सकते हैं लेकिन कोई तुरंत पहल करने की समझ पर सवाल नहीं उठा सकता है क्योंकि ऐसी निर्णायक घोषणा ने सभी देशों को तुरंत कदम उठाने के लिए आगाह किया। सितंबर के अंत से संक्रमण की नियंत्रित स्थिति से गुजर रहे जापान ने ओमिक्रॉन के आयात को रोकने के लिए किसी भी देश से यात्रियों के आने पर पाबंदी लगा दी लेकिन दो बार वैक्सीन ले चुके एक नामीबियाई कूटनीतिक के जरिये यह वायरस देश के भीतर आ चुका था। जापान ने आने पर लगी पाबंदी तो हटा ली, पर वह नयी लहर रोकने के लिए सभी उपाय कर रहा है, जिनमें बूस्टर खुराक देने का प्रावधान भी है। 26 नवंबर तक स्थिति पूरी तरह नियंत्रण में थी। हम तीसरी लहर का जोखिम उठाने की हालत में नहीं थे। जीवन धीरे-धीरे सामान्य हो रहा था, शैक्षणिक संस्थाएं खुल रही थीं, कुछ राज्यों में चुनाव भी होनेवाले हैं। ऐसे में यह अपेक्षित था कि तीसरी लहर को रोकने के उपाय तुरंत किये जायेंगे, लेकिन नीति-निर्धारकों ने यह रणनीति नहीं अपनायी। डेल्टा की तुलना में ओमिक्रॉन का असर कम है, पर बड़ी संख्या में संक्रमण से बीमारियां निश्चित बढ़ेंगी, जिससे सबसे अधिक बुजुर्ग, पहले से बीमार, गर्भवती महिलाएं आदि प्रभावित होंगे।

आसन्न लहर से खतरा नहीं होने की अपेक्षा रखने का कोई तुक नहीं था। आखिर सरकार ने ऐसा क्यों किया, इसके बारे में पहली और दूसरी लहर में अपनायी गयी रणनीतियों से कोई संकेत नहीं मिलता। पहली लहर के समय कोई वैक्सीन उपलब्ध नहीं थी। आपात उपयोग के लिए टीकों को दूसरी लहर से लगभग तीन माह पहले तीन जनवरी, 2021 को मंजूर किया गया लेकिन वैक्सीन को आगे की चुनौतियों से निपटने के एक उपाय के रूप में पेश करने का कोई प्रयास नहीं दिख रहा था। वह भी अजीब और निराशाजनक था। टीकाकरण अभियान में पहले हर माह आबादी के एक फीसदी को वैक्सीन दिया जा रहा था, यह गति बाद में बढ़कर दो फीसदी हुई। दूसरी लहर के स्वाभाविक रूप से खत्म होने तक टीकाकरण दर इससे अधिक नहीं हुई। हम इसके लिए पारंपरिक अक्षमता, धीरे-धीरे अभियान चलाने, कुप्रबंधन और अन्य कारकों को जिम्मेदार ठहरा सकते हैं पर अब ऐसे कारण नहीं होने चाहिए। हमारे पास ओमिक्रॉन के असर को रोकने हेतु जरूरी प्रतिरोधक क्षमता पैदा करने के लिए पर्याप्त मात्रा में वैक्सीन है। फिर भी वैक्सीन के व्यापक इस्तेमाल के संबंध में 26 नवंबर से 26 दिसंबर तक कुछ नहीं किया गया। बाद में जो पहलें हुईं, वह कमतर थीं। किशोरों के टीकाकरण के साथ अगर हम आबादी के बहुत बड़े हिस्से को टीका दे भी देते हैं, जो किसी ठोस कार्य योजना की अनुपस्थिति में संभव नहीं लग रहा है तो इससे तीसरी लहर की स्थिति तय नहीं होगी। साठ साल से अधिक आयु वाले, बीमार लोगों और फ्रंटलाइन वर्करों को बूस्टर डोज देने का फैसला भी देर से लिया गया। सलाह के अनुरूप और विज्ञान के अनुसार दूसरी और तीसरी खुराक में छह माह का अंतराल देने की बजाय कम से कम नौ माह का फर्क रखना यह बताता है कि सरकार जोखिम के साये में रह रहे लोगों के जीवन और स्वास्थ्य पर तीसरी लहर के असर को कम करने की जल्दी में नहीं है। सरकार वैरिएंट से लड़ने तथा इससे हो सकनेवाली परेशानी को कम करने की जल्दी में नहीं है। हम पूछ सकते हैं कि क्या हम ऐसा इसलिए कर रहे हैं क्योंकि यह वैरिएंट युवाओं, स्वस्थ और साधन संपन्न लोगों को संभवत: कम बीमार बनाता है। क्या हमें बुजुर्गों, बीमारों और कम प्रतिरोधक क्षमता के लोगों की चिंता नहीं है? अगर ऐसा नहीं है, तो कार्रवाई जल्दी की जाती।

कई दिक्कतों को दूर करता है जायफल मिल्क

हे र सारे पोषक तत्वों से भरपूर होता है और ये सेहत के लिए बेहद फायदेमंद होता है, ये तो पता ही है आपको। लेकिन क्या आप ये जानते हैं की जायफल मिक्स करने से दूध और भी ज्यादा फायदेमंद हो जाता है? बता दें कि जायफल में कैल्शियम, आयरन, मैग्नीशियम, प्रोटीन, फाइबर, फॉस्फोरस, पोटैशियम, विटामिन सी, बी 6, ए, सोडियम और जिंक जैसे पोषक तत्व होते हैं। जायफल मिल्क का सेवन करने से कई सारे फायदे सेहत को मिलते हैं। आइये आज आपको बताते हैं कि जायफल को दूध में मिक्स करके पीने से आपको क्या फायदे मिल सकते हैं। साथ ही ये भी बताते हैं कि जायफल मिल्क को किस तरह से तैयार किया जा सकता है।

स्किन को ग्लोइंग बनाता है

जायफल मिल्क केवल सेहत को ही फायदे नहीं देता है। ये स्किन को ग्लोइंग बनाने में भी काफी मददगार साबित होता है। आप जायफल को दूध में मिलाकर इसको अपनी स्किन पर इस्तेमाल कर सकते हैं।

नींद न आने की दिक्कत दूर करे

नींद न आने की दिक्कत को दूर करने में जायफल मिल्क काफी फायदेमंद होता है। इसको रात को सोने से पहले पीने से अच्छी नींद आती है, साथ ही ये तनाव और थकान को दूर करने में भी काफी मदद करता है।

पेट की दिक्कत दूर करे

जायफल मिल्क पीने से आपकी पेट संबंधी कई तरह की दिक्कतों को दूर करने में भी मदद मिलती है। ये गैस, कब्ज और अपच जैसी दिक्कतों को दूर करता है और डाइजेशन को बेहतर बनाता है।

जोड़ों के दर्द से राहत दे

दूध में जायफल मिक्स करके पीने से आपको जोड़ों के दर्द से काफी हद तक राहत मिल सकती है। दरअसल, जायफल में एंटी-इंफ्लामेट्री गुण मौजूद होते हैं, जो जोड़ों और मांसपेशियों के दर्द व सूजन से राहत देने में मदद करते हैं।

इस तरह से तैयार करें जायफल मिल्क

जायफल मिल्क तैयार करने के लिए आप दूध को उबालकर इसमें जायफल का पाउडर मिक्स कर लें फिर गुनगुना रह जाने पर इसका सेवन करें। या फिर आप दूध को उबालते समय ही इसमें जायफल डालकर दूध में उबाल आने दें। इसके बाद छानकर जायफल मिल्क का सेवन करें।

हंसना मना है

एक ढोल वाला शादी में खूब ढोल बजा रहा था। उसके ढोल पर दो महिलाओं के फोटो बने हुए थे। एक व्यक्ति ने पूछा: तुम सुंदरता के पुजारी लगते हो... ढोल वाले ने बोला: पुजारी जैसी कोई बात नहीं है। एक तरफ मेरी सास की फोटो है और दूसरी तरफ तो आप समझ ही गए होंगे...घर पर तो मौका मिलता नहीं। इसीलिए यहीं दे दना दन दे...

पड़ोसन: बहन, नया हार तो बहुत अच्छा है , कितने का पड़ा? दूसरी महिला: ज्यादा नहीं, दो दिन की लड़ाई, एक दिन की भूख हड़ताल, 2 दिन का मौन व्रत और बस थोड़ा रोना धोना। पड़ोसन अभी अपने पति से रूठ जाती है।

पति: क्या तुम जानती हो दुनिया में सबसे ज्यादा शरीफ कौन है? पत्नी: दुनिया में सिर्फ वही लोग शरीफ हैं....जिनके मोबाइल में पासवर्ड नहीं है।

पप्पू एक माइक्रोसॉफ्ट कंपनी में interview देने गया। इंटरव्यूकर्ता: Java के चार version बताइए। पप्पू: मर जावा, मिट जावा, लुट जावा, और सट्टके जावा। इंटरव्यूकर्ता: शबाश, अब सीधा घर जावा।

पत्नी: अजी सुनते हो? हमारी शादी करवाने वाले पंडित जी का देहांत हो गया। पति: एक-न-एक दिन तो उसे उसके कर्मों का फल मिलना ही था।

कहानी — दूरदर्शी सुमन

प्रिया एक अमीर और सुंदर लड़की थी, उसके पास पहनने के लिए ढेर सारे सुंदर कपड़े थे। लेकिन उसका मन किसी भी कपडे से बहुत जल्दी भर जाता था। दो-चार बार पहनकर ही वह अपने सुंदर-सुंदर कपडे भी फेंक देती थी। उसको किसी भी चीज़ की कीमत का अहसास नहीं था। खाना भी वह आधा खाती थी और आधा मेज पर ही छोड़ देती थी। उसके घर में एक नौकरानी थी- सुमन। सुमन एक बहुत ही समझदार लड़की थी। वह पूरा दिन प्रिया का सामान संभालकर रखती रहती थी। जो खाना प्रिया मेज पर छोड़ देती थी, उसमें से कुछ वह खा लेती थी और कुछ गरीब बच्चों को दे देती थी। जो कपडे प्रिया फेंक देती थी, उन्हें सुमन अपने लिए रख लेती थी। उनसे वह अपने लिए अच्छी-अच्छी पोशाकें सिल लेती थी। एक दिन प्रिया से मिलने के लिए एक युवक आया। उसने प्रिया को उसको एक मित्र के यहाँ देखा था। प्रिया उसे अच्छी लगी। इसीलिए वह प्रिया के माता-पिता से मिलकर बात करने आया था। वह प्रिया से विवाह करना चाहता था। उस युवक ने अपना नाम समीर बताया। समीर एक सभ्य और अच्छा लड़का था। प्रिया के माता-पिता को वह पसंद था। उन्होंने समीर को आदर से बैठाया और सुमन से चाय लाने को कहा। सुमन जब चाय लेकर आई तो उसने एक बहुत ही सुंदर पोशाक पहनी हुई थी। यह पोशाक उसने प्रिया की पुरानी पोशाकों से बनाई थी। उस पोशाक में सुमन बहुत ही अच्छी लग रही थी। प्रिया ने जब सुमन को देखा तो समीर से बोली, ये हमारी नौकरानी है-सुमन। मेरे पुराने कपड़े पहनकर अपने आपको बहुत सुंदर समझ रही है। समीर ने देखा कि सुमन की पोशाक कहीं से भी पुरानी नहीं लग रही थी। उसने प्रिया से पूछा, तुम ऐसा क्यों कह रही हो ? यह पोशाक तो एकदम नई है। तब प्रिया ने उसे बताया कि उसका मन जब किसी कपड़े से भर जाता है तो वह उसे फेंक देती है। सुमन बस वही पुराने कपडे पहनती है। उसके पुराने कपड़ों को जोड़कर अपने लिए पोशाकें बनाती रहती है। कभी-कभी तो मेरा जूठा खाना तक बाहर के गंदे बच्चों को खिला देती है। बेचारी के पास नई चीजों के लिए पैसे नहीं हैं न! समीर ने महसूस किया कि सुमन एक बहुत समझदार और दूरदर्शी लड़की है। जबकि प्रिया एकदम बिगड़ी हुई और खर्चीली। उसने प्रिया के माता पिता से कहा, आपकी बेटी बहुत सुंदर है, लेकिन घर संभालने के लिए जो गुण होने चाहिए वह उसमें नहीं है। सुमन में ये सभी गुण हैं, इसीलिए मैं प्रिया से नहीं बल्कि सुमन से विवाह करना चाहता हूं। प्रिया के माता-पिता का दु:ख तो हुआ लेकिन वे सुमन के लिए खुश थे। वे जानते थे कि सुमन कितनी अच्छी है। प्रिया को यह बात इतनी बुरी लगी कि ठसने अपने-आपको पूरी तरह बदल डाला। कुछ दिनों के बाद समीर फिर प्रिया के घर आया। सुमन ने उसे बताया कि प्रिया बदल गई है। समीर ने प्रिया से कहा, प्रिया, मैं तो सचमुच सिर्फ तुम्हें पसंद करता हूं। सुमन से विवाह की बात तो बस एक नाटक था, जो हम सबने मिलकर किया था, तुम्हें बदलने के लिए। हम चाहते थे कि तुम्हें अपनी गलती का अहसास हो। मैं खुश हूं कि तुम बदल गई हो। अब बताओ, तुम मुझसे विवाह करोगी? प्रिया खड़ी-खड़ी शरमा रही थी और सुमन दोनों को देखकर बहुत खुश थी।

5 अंतर खोजें

जानिए कैसा रहेगा कल का दिन

पंडित संदीप आत्रेय शास्त्री

लेखक प्रसिद्ध ज्योतिषविद हैं। सभी प्रकार की समस्याओं के समाधान के लिए कॉल करें-9837081951

मेष — पार्टनर के साथ बाहर घूमने जा सकते हैं। आज का दिन लव लाइफ नार्मल रहेगी। पति-पत्नी के बीच प्यार बना रहेगा। आज पार्टनर के साथ रोमांस करने का मौका मिलेगा।

वृषभ — आज के दिन सिंगल लोगों को पार्टनर मिल सकता है। आज रिलेशनशिप को आगे बढ़ा सकेंगे। पार्टनर से आपको खूब प्यार मिलेगा। पार्टनर की सेहत की चिंता रहेगी। आज आपके रोमांटिक मूड में रहेंगे।

मिथुन — ऑफिस में कार्यभार अधिक रहेगा। इससे मानसिक तनाव रहेगा। पार्टनरशिप में मनमुटाव हो सकता है। आज पार्टनर की कोई बात बुरी लग सकती है। पति-पत्नी के बीच रिश्ते सामान्य रहेंगे।

कर्क — एक्स्ट्रा अफेयर शुरू होने की संभावना बन रही है। आज आपको प्रपोजल मिल सकता है। आज आप आकर्षण का केन्द्र बने रहेंगे। आज आपकी तारीफ होगी।

सिंह — प्रेमी की सेहत को लेकर चिंता रहेगी। लव लाइफ में खुशी और तालमेल रहेगा। जो किसी को प्रपोज करने का मन बना रहे हैं उनके लिए आज का दिन अनुकूल है।

कन्या — प्रेमी के मन का ख्याल रखें। अपने पार्टनर की बात पर ध्यान दें। पार्टनर की कोई बात आपको परेशान कर सकती है। आज अपने साथी से बेवजह बहस करने से बचें।

तुला — रोमांस कर सकते हैं। अपने से ज्यादा उम्र वाले किसी इंसान की और आप आकर्षित भी हो सकते हैं। शादी के लिए प्रपोजल मिल सकता है। साथी परेशान रहेगा।

वृश्चिक — कुछ लोग प्यार को शादी में बदलने का मन बना सकते हैं। पति-पत्नी के लिए आज का दिन अच्छा होगा। सहयोगी से आकर्षण बढ़ेगा। आज की शाम पार्टनर के साथ बाहर बिताएं।

धनु — पति-पत्नी के बीच तालमेल बना रहेगा। कोई छोटी बात ज्यादा परेशान कर सकती है। सोच समझकर बोलें। यदि आप किसी के साथ रिलेशनशिप में हैं तो आज आपको खूब रोमांस करने का मौका मिलेगा।

मकर — सिंगल लोगों की लाइफ में कोई खास इंसान आ सकता है। पति-पत्नी के बीच मन-मुटाव हो सकता है। विवाद होने पर बात को खत्म करने की पहल करें। अविवाहित लोगों को शादी का प्रपोजल

कुम्भ — पार्टनर से बहस करने से बचें। सिंगल लोगों को शादी का प्रपोजल मिल सकता है। आपकी किसी बात से पार्टनर परेशान हो सकता है। सोच-समझकर ही कुछ बोलें। आज के दिन लव लाइफ सामान्य रहेगी।

मीन — आज आपकी मनोकामना पूरी हो सकती है। पति-पत्नि के बीच समय की कमी हो सकती है। अविवाहित लोगों की शादी की बात चल सकती है। आज के दिन लव लाइफ में रुकावटे दूर होंगी।

मोंजोलिका बनकर फिर डराने के लिए तैयार विद्या बालन

कमाल दिखाएंगे, ये देखना दिलचस्प होगा।

बॉलीवुड | गपशप

अक्षय कुमार और विद्या बालन की हिट फिल्म भूल भूलैया का अगला पार्ट नए कास्ट के साथ आने की तैयारी में है। भूल भूलैया 2 में कार्तिक आर्यन, तबू और कियारा आडवाणी के नाम फाइनल हो चुके हैं। फिल्म से कार्तिक का लुक भी रिलीज हो चुका है। सभी किरदारों में से जो सबसे अहम है वो है मोंजोलिका का रोल। भूल भूलैया में विद्या बालन ने यह रोल प्ले किया था। और अब रिपोर्ट्स हैं कि भूल भूलैया 2 में भी विद्या मोंजोलिका के कैरेक्टर में नजर आएंगी।

जी हां, सही सुना आपने, मोंजोलिका लौट रही है और वो भी कोई और नहीं पुरानी मोंजोलिका यानी विद्या बालन। अनीस बज्मी के निर्देशन में बन रही भूल भूलैया पार्ट 2 में विद्या मोजोंलिका के किरदार में दिखाई देंगी। मिड-डे ने सूत्र के हवाले से इसकी जानकारी दी है। सूत्र ने कहा- उनका इक्वेशन 2011 से है, जब विद्या ने अनीज बज्मी की फिल्म थैंक्यू में कैमियो अपीयरेंस दिया था। उसने मोंजोलिका के कैरेक्टर को बनाया, शाही नर्तकी का भूत, यादगार है। विद्या आमी जे तोमार गाने में डांस करेंगी या फिर क्लाइमैक्स में नजर आएंगी।

वैसे बता दें, अनीस बज्मी ने बताया था कि मोंजोलिका उनका पसंदीदा कैरेक्टर है। डायरेक्टर ने कहा था- अगर फिल्म भूल भूलैया है, तो उसे (विद्या बालन) को भूल भूलैया 2 में होना ही चाहिए। बाकी सब सरप्राइज रहने दें।

डायरेक्टर की यह बात कहीं ना कहीं यह कंफर्म कर रही है कि फिल्म में विद्या ही मोंजोलिका के किरदार में दिखाई देंगी। अब जब तक ऑफशियल कंफर्मेशन नहीं आता या फिल्म रिलीज नहीं होती, इस कैरेक्टर पर संशय बना रहेगा। भूल भूलैया साल 2007 में आई थी। इसका निर्देशन डायरेक्टर प्रियदर्शन ने किया था। फिल्म में विद्या, अक्षय के अलावा अमीषा पटेल और शाइनी आहूजा मेन रोल में थे। यह हॉरर कॉमेडी दर्शकों को बहुत पसंद आई थी। अब भूल भूलैया 2 में अनीज बज्मी क्या

इंडियाज बेस्ट डांसर-2 विनर बनीं सौम्या कांबले

बॉलीवुड | मसाला

पॉपुलर डांस रियलिटी शो इंडियाज बेस्ट डांसर सीजन 2 को इस सीजन का बेस्ट का नेक्स्ट अवतार मिल गया है। एक से बढ़कर एक डांस एक्ट्स और टेक्नीक के साथ इंडियाज बेस्ट डांसर का द अल्टीमेट फिनाले बड़ा ही शानदार व भव्य रहा, जहां पूरा देश दिल थामकर इस बात का इंतजार कर रहा था कि बेस्ट 5 फाइनलिस्ट्स में से किसे विजेता घोषित किया जाएगा।

फैंस के इंतजार की घड़ी खत्म हुई, पुणे की सौम्या कांबले को इस सीजन का विजेता घोषित किया गया और उन्हें इस प्रतिष्ठित ट्रॉफी से नवाजा गया। सौम्या को सोनी एंटरटेनमेंट टेलीविजन की ओर से 15 लाख रुपए का चेक और स्विफ्ट कार गि?फ्ट मिली। उनकी कोरियोग्राफर वर्तिका झा को 5 लाख रुपए के चेक से सम्मानित किया गया। बेस्ट 5 फाइनलिस्ट्स में से जयपुर के गौरव सरवन को फर्स्ट रनर अप और ओडिशा की रोजा राणा को सेकंड रनरअप रहे। असम के रक्तिम ठाकुरिया और केरल के जमरूद को थर्ड और फोर्थ रनर अप घोषित किया गया। इसके अलावा सभी को एक-एक लाख रुपए का चेक दिया गया।

बता दें, एक बार शो में स्पेशल गेस्ट बनकर आईं आशा भोसले सौम्या के डांस मूवमेंट्स से इतनी इंप्रेस हो गई थीं कि उन्होंने छोटी हेलेन की उपाधी दे दी थी। फिनाले में सौम्या ने वर्तिका संग मिलकर बेली डांस और फ्री-स्टाइल एक्टर परफॉर्म किया था। सौम्या ने अक्सर बताया है कि उनके पापा की ख्वाहिश है कि वे डॉक्टर बनें वहीं मां चाहती है कि उनकी बेटी डांसर बन नाम रोशन करे। शो के दौरान सौम्या को कई सेलिब्रिटी गेस्ट्स से प्यार मिलता रहा है। नोरा फतेही ने उन्हें बेली डांसिंग कॉइन बेल्ट गिफ्ट दिया था।

बॉलीवुड | मन की बात

इच्छाशक्ति और विश्वास से कैंसर से जंग जीती : संजय

संजय दत पिछले कई सालों से फिल्म इंडस्ट्री में काम कर रहे हैं। अपनी जिंदगी में कई उतार चढ़ावों का सामना करने वाले संजय दत के बारे में साल 2020 में यह जानकारी सामने आई कि उन्हें चौथे स्टेज का फेफड़ों का कैंसर है। इसके बाद संजय ने यह जानकारी दी थी कि वो अपने मेडिकल ट्रीटमेंट के लिए ब्रेक ले रहे हैं, जिसने उनके फैंस की चिंता को बढ़ा दिया था। हालांकि संजय ने इस खतरनाक बीमारी को मात दी और अपने दोनों बच्चों इकरा और शहरान के जन्मदिन पर सोशल मीडिया के जरिए यह खुलासा किया था कि उन्होंने कैंसर को मात दे दी है। अब हाल ही में संजय दत ने बताया कि उन्होंने इस बीमारी को कैसे हराया। उन्होंने कहा कि इस मुश्किल समय में इच्छाशक्ति और विश्वास बनाए रखे रहने के कारण वो इसे मात दे सके। एक्टर ने कहा भगवान की कृपा और उनके परिवार, डॉक्टरों व शुभचिंतकों के समर्थन से, वह कठिन दौर से पूरी तरह से उबर गए हैं। संजय दत ने स्वस्थ होने के बाद पोस्ट कर फैंस को बताया था- बीते कुछ हफ्ते मेरे और मेरे परिवार के लिए बेहद मुश्किल थे लेकिन कहते हैं कि भगवान भी कड़ी चुनौतियां अपने सबसे ज्यादा बहादुर सिपाहियों के सामने ही रखता है। और आज बच्चों के जन्मदिन के मौके पर मैं आप सबको बताना चाहता हूं कि कैंसर से मैं अपनी जंग जीत चुका हूं। और उनको मैं स्वस्थ्य और हंसते खेलते परिवार का बेस्ट गिफ्ट दे सकता हूं। संजय दत ने पिछले साल अगस्त को सोशल मीडिया के जरिए जानकारी दी थी कि वो अपने मेडिकल ट्रीटमेंट के लिए ब्रेक ले रहे हैं।

अजब-गजब | ये था दुनिया का सबसे रहस्यमयी इंसान

इस इंसान में थी जमीन के अंदर तक देखने की ताकत

इंसान धरती पर वहां तक देख सकता है जहां तक उसकी नजर जाती है साथ ही आसमान में भी वह अनंत तक देख सकता है लेकिन जमीन के अंदर देख पाना इंसान के बस की बात नहीं है लेकिन आज हम आपको एक ऐसे ही शख्स के बारे में बताने जा रहे हैं जो जमीन के ऊपर ही नहीं जमीन के अंदर भी देख सकता था। वह जमीन में कहां पानी मौजूद है और कहां नहीं यह भी बता देता था। दरअसल, हम बात कर रहे हैं कनाडा के रहने वाले जेराओल डेरोसिर्स नाम के एक व्यापारी की। जिसके बारे में कहा जाता है कि उसमें एक अद्भुत क्षमता थी। वो यह कि वह धरती के भीतर देख सकता था।

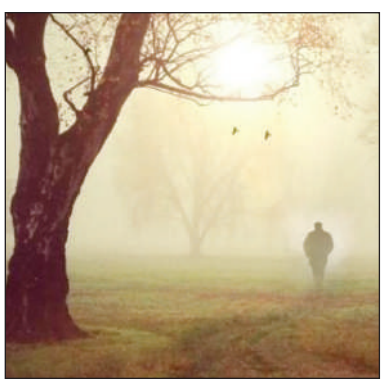

बताया जाता है कि डोरोसिस के पेट में आखिरी पसली के नीचे कई बार दर्द उठता था, लेकिन दर्द ज्यादा देर तक नहीं रहता था, इस कारण उसने उसे कभी गंभीरता से नहीं लिया। बात साल 1940 की है। तब उसे यह दर्द कई बार हुआ और काफी देर तक चला। उसके बाद उसने खुद को डॉक्टर को दिखाने का फैसला लिया। डॉक्टर ने उसे बताया कि उसे कोई शारीरिक बीमारी नहीं है बल्कि यह बीमारी मनोवैज्ञानिक है। उसने उसे आराम करने की सलाह देते हुए उसे नींद की कुछ गोलियां दीं। उनसे उसे फायदा भी हुआ। उसने महीने भर तक नींद की गोलियां लीं। उसके बाद वह अपने रिश्ते के एक भाई के फार्म हाउस पर क्यूबेक चला गया। उसके भाई ने उसे बताया कि उसके यहां पानी की बड़ी दिक्कत है। इस कारण वह मवेशी पालने का धंधा बंद करने की सोच रहा है। एक दिन वहीं पर अचानक डोरोसिर्स के पेट में फिर दर्द उठा और उसी समय उसने अपने भाई से कहा कि, यह मत पूछना कि मैं यह कैसे कह रहा हूं, क्योंकि मैं नहीं जानता मुझे कैसे पता लगा। लेकिन मैं तुमको बताना चाह रहा हूं कि जिस जगह मैं बैठा हूं, वहां भूमिगत जल का तेज प्रवाह है। उसने उसे यह भी बताया कि वहां 70 फीट के नीचे तीन इंच मोटी पार लहर चल रही है। पानी बहुत अच्छा है, जिसके नीचे एक चट्टान है उस को मत खोदना। नहीं तो वह सारा पानी नीचे चला जाएगा। उसके बाद डोरोसिर्स के भाई ने वहां खुदाई करवाई। जिसके बाद वहां पीने योग्य पानी का अथाह भंडार मिला। इस घटना के बाद डोरोसिर्स की इस चमत्कारी क्षमता की चर्चा जोरों से फैल गई और लोग उसके पास पानी की खोज करवाने के लिए आने लगे। फिर उसने बिना किसी असफलता के छह सौ कुएं सिर्फ जमीन के ऊपर चल कर ढूंढ़ निकाले। हालांकि हर बार उसके पेट में दर्द हुआ। इस घटना की खबर जब कनाडा सरकार को हुई तो उन्होंने डोरोसिर्स की जांच करवाई। वैज्ञानिक भी परखने में जुटे ताकि अगर वह कोई पाखण्ड है तो उसका पर्दाफाश किया जा सके, लेकिन जांच में उन्होंने पाया कि उसकी चमड़ी में कोई विद्युत ऊर्जा मौजूद थी जो कि सामान्य लोगों से अलग है। इसके अलावा उन्हें कुछ भी पता नहीं चला. डोरोसिर्स थोड़े समय बाद तो चट्टान की सतह, रेत के बारे में भी सही-सही अनुमान लगाने लगा. लेकिन यह सब उसी वक्त बताता था जब उसके पेट में दर्द उठता था। उसके इस रहस्य के बारे में आजतक कोई नहीं जान पाया।

पूरी जिंदगी औरत बनकर रहते हैं यहां के पुरुष, जानकर हो जायेंगे हैरान

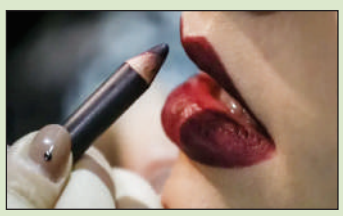

इस दुनिया में बहुत से ऐसे समुदाय और जातियां हैं, जिनके रीति रिवाज और संस्कृति बिल्कुल अलग है। इनकी संस्कृति और रीति-रिवाज ऐसे हैं, जिनके बारे में जानकर सभी को आश्चर्य होता है। इन समुदायों के अपने तौर-तरीके होते हैं। आज हम आपको ऐसे ही एक समुदाय के बारे में बताने जा रहे हैं। इस समुदाय के बारे में जानकर आपको भी आश्चर्य होगा। दरअसल, यहां के पुरुष पूरी जिंदगी औरत बनकर रहते हैं। जानते हैं कि इस समुदाय और इनकी इस विचित्र परंपरा के बारे में। हम जिस समुदाय की बात कर रहे हैं, वह इंडोनेशिया में रहता है। खास बात यह है कि यह समुदाय मुस्लिम धर्म को मानता है, लेकिन दुनिया के अन्य मुस्लिम समुदायों से बिल्कुल ही अलग है। इंडोनेशिया के इस वारिया समुदाय की अपनी अलग मान्यताएं और आदर्श हैं। हालांकि यह समुदाय अन्य मुस्लिमों की तरह अपने धर्म का पालन करता है।

इस वजह से मर्द पूरी जिंदगी औरत बनकर रहते हैं

इस समुदाय में ट्रांसजेंडर लोग होते हैं। इस समुदाय के लोग पुरुष के रूप में पैदा होते हैं, लेकिन जीवनभर औरत के रूप में अपनी जिंदगी जीते हैं। इस समुदाय के लोग वारिया कहलाते हैं और पूरी जिंदगी औरत बनकर रहते हैं। हैरान करने वाली बात यह है कि ये पैदा तो बायलॉजिकली पुरुष होते हैं, लेकिन इन्हें लगता है कि इनकी आत्मा महिला की है। इसी कारण ये लोग महिला बनकर पूरी जिंदगी जीते हैं।

बराक ओबामा की दाई भी वारिया समुदाय की थीं

बताया जाता है कि वारिआ शब्द इंडोनेशियन शब्द वानिता यानि महिला और प्रिआ मतलब पुरुष से मिलकर बना है। वहीं अमरीका के पूर्व राष्ट्रपति बराक ओबामा का भी इस समुदाय से संबंध है। दरअसल, उनकी दाई वारिआ समुदाय की थी। बता दें कि बराक ओबामा के शुरुआती जीवन का काफी हिस्सा इंडोनेशिया में ही बीता था। इस दौरान उनकी देखभाल वारिआ समुदाय क दाई करती थी।

तो भाजपा के हित में लगायी गयी रैलियों पर रोक!

» बड़ा सवाल, क्या कोरोना की आड़ में चुनाव आयोग सत्ता पक्ष का दे रहा साथ

» 4पीएम की परिचर्चा में प्रबुद्धों ने किया मंथन

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

लखनऊ। चुनाव आयोग ने कोरोना संक्रमण को देखते हुए बड़ी रैलियों पर रोक लगा दी है लेकिन बड़ा सवाल यह है कि जब दूसरी लहर में देश में हाहाकार मचा था तक बंगाल और पंचायत चुनाव हुए थे और उस समय चुनाव आयोग को रैलियों पर रोक लगाने की याद क्यों नहीं आयी? क्या रैलियों पर रोक लगाने के पीछे भाजपा को फायदा पहुंचाना है? ऐसे कई सवाल उठे वरिष्ठ

पत्रकार अशोक वानखेड़े, श्रवण गर्ग, अजय शुक्ला, प्रोफेसर लक्ष्मण यादव, चिंतक रविकांत और 4पीएम के संपादक संजय शर्मा के बीच चली लंबी परिचर्चा में।

रविकांत ने कहा, चुनाव आयोग का यह फैसला कोरोना संक्रमण को देखते हुए लिया गया। हालांकि चुनाव का जो पैटर्न है उससे भाजपा को प्रचार में मदद मिलेगी लेकिन यह चुनाव जनता बनाम सरकार का हो गया है। लिहाजा भाजपा को कोई फायदा नहीं होने वाला है। अजय शुक्ला ने कहा, जहां जो दल विनिंग पोजिशन में दिख रहा वहां भाजपा के नेता जा रहे हैं। चुनाव आयोग भाजपा का सहयोगी संगठन बन चुका है। वह संघ व भाजपा के लिए काम कर रहा है। इसके जरिए जो दल जमीन से जुड़े हैं उनको काटने की कोशिश की जा रही है।

परिचर्चा
रोज शाम को छह बजे देखिए 4PM News Network पर एक ज्वलंत विषय पर चर्चा

लक्ष्मण यादव ने कहा, सत्ता में बैठे लोगों को जब यह समझ में आने लगा कि कुर्सी दोबारा मिलना मुश्किल होती जा रही है तो उन्होंने सत्ता का दुरुपयोग करना शुरू कर दिया है। जो पर्दे के पीछे किया जाता था वह अब खुलेआम किया जा रहा है। संविधान अब केवल किताबें बनकर रह गयी है। अशोक वानखेड़े ने कहा, चुनाव आयोग सत्ता के सामने मुजरा कर रहा है। प्रदेश की जनता उत्पीड़न को भूली नहीं है। श्रवण गर्ग ने कहा, दुनिया के तमाम मुल्कों में दो पार्टियों का सिस्टम है। डिजिटल का प्रयोग यदि स्थायी कर दिया जाए तो इससे छोटी पार्टियां चुनाव रेस से बाहर हो जाएंगी। चुनावी खर्च में कमी आएगी। भाजपा के पास पैसा है और वह इसका फायदा लेगी। लोग रैलियों से मन नहीं बनाते हैं। प्रदेश में सरकार के खिलाफ आक्रोश है।

आप जल्द करेगी सीएम चेहरे की घोषणा: चीमा

» जनता कांग्रेस के हर झूठ का देगी मुंहतोड़ जवाब

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

चंडीगढ़। आम आदमी पार्टी (आप) के नेता हरपाल सिंह चीमा ने कहा कि आप जल्द ही अपने मुख्यमंत्री चेहरे की घोषणा करेगी। कांग्रेस सरकार की ओर से झूठे विज्ञापन पर करदाताओं की गाढ़ी कमाई के करोड़ों रुपये बर्बाद किए जा रहे हैं। पंजाब के लोग 14 फरवरी को कांग्रेस के हर झूठ का मुंहतोड़ जवाब देंगे।

चीमा ने दावा किया कि आप ने अपने कोर वालंटियरों को 80 फीसदी टिकट दिए हैं और ऐसा करने वाली आप एकमात्र पार्टी है। आप चुनाव आयोग के सभी निर्देशों और कोविड से संबंधित दिशानिर्देशों का पालन करेगी क्योंकि आप के लिए लोगों का स्वास्थ्य सर्वोच्च प्राथमिकता है। इस दौरान दूसरे दलों से पार्टी में शामिल हुए कई नेताओं को चीमा ने आप की सदस्यता दिलाई। वहीं आप के यूथ विंग मोहाली ने टिकटों के आवंटन को लेकर बगावत शुरू कर दी है। विंग के जिला अध्यक्ष गुरतेज सिंह पन्ने ने कहा कि यह दिल्ली के मुख्यमंत्री और आप पार्टी संयोजक अरविंद केजरीवाल के इशारे पर किया जा रहा है।

बारिश व ओलावृष्टि से प्रभावित किसानों को मिलेगी राहत राशि

सीधे खाते में जाएगी धनराशि, 12 जिलों के लिए आवंटित किया गया राहत पैकेज

» सर्वे कराने के बाद जिलाधिकारी कराएंगे भुगतान, निर्देश जारी

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

लखनऊ। बारिश व ओलावृष्टि से प्रभावित किसानों को शासन की ओर से सहायता राशि उपलब्ध करायी जाएगी। सहायता देने के लिए 12 करोड़ की धनराशि आवंटित की गयी है। सर्वे कराने के बाद जिलाधिकारी संबंधित किसानों को सहायता राशि उपलब्ध कराएंगे।

अपर मुख्य सचिव राजस्व मनोज कुमार सिंह ने महोबा, हमीरपुर, जालौन, कानपुर देहात, कानपुर नगर, झांसी, उन्नाव, मथुरा, ललितपुर, फिरोजाबाद, हरदोई व एटा के जिलाधिकारियों को एक-एक करोड़ का आवंटन कर दिया है। जिलाधिकारियों को भेजे पत्र में लिखा गया है कि पिछले सप्ताह प्रदेश में ओलावृष्टि से हुई फसल की क्षति, जनहानि व पशु हानि के सापेक्ष प्रभावित व्यक्तियों व परिवारों को राहत सहायता दी जानी है। इसके लिए राज्य आपदा मोचक निधि से 12 करोड़ आवंटित किए गए हैं। राहत आयुक्त कार्यालय की वेबसाइट पर बनाए गए ऑनलाइन कृषि माड्यूल पर किसानों के प्लाट टू प्लाट सर्वे कराकर उसका विवरण कृषि माड्यूल पर दर्ज किया जाएगा, तब किसानों को हुए नुकसान का भुगतान होगा। राहत सहायता के वितरण में निर्वाचन आयोग की ओर से तय माडल कोड ऑफ कंडक्ट में दिए गए निर्देशों का अनुपालन किया जाएगा। स्वीकृत धनराशि आहरित करके बैंक खाते में नहीं रखी जाएगी बल्कि कोषागार से सीधे लाभार्थी के बैंक खाते में ई-पेमेंट के माध्यम से भुगतान होगा। वितरित सहायता की सूची ग्राम सभा के नोटिस बोर्ड पर प्रदर्शित की जाए और ग्राम सभा की अगली खुली बैठक में उसे पढ़कर सुनाया जाए।

ऐसे रुक चुका संक्रमण: सोशल डिस्टेंसिंग की उड़ी धज्जियां

लखनऊ। (4पीएम न्यूज़ नेटवर्क) ओमिक्रोन के साथ ही राजधानी लखनऊ में संक्रमण का ग्राफ भी लगातार तेजी से ऊपर चढ़ रहा है। नए मरीजों में लगातार बढ़ोत्तरी जारी है। संक्रमित मरीजों के बढ़ने के ट्रेंड में बुजुर्गों में खतरा ज्यादा दिखे हैं। वहीं स्वास्थ्य विभाग लगातार बढ़ रहे मरीजों की संख्या को लेकर लोगों से गाइड लाइन का पालन करने की अपील कर रहे है। बावजूद इसके अब भी सार्वजनिक स्थानों व अस्पतालों में लापरवाही बरती जा रही है। सिविल अस्पताल में लोग सोशल डिस्टेंसिंग का पालन करते नहीं दिखे।

फोटो: सुमित कुमार

प्रियंका गांधी के वादे का असर उत्तराखंड में भी

कांग्रेस से 78 महिलाओं ने मांगा टिकट

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

नई दिल्ली। कांग्रेस की राष्ट्रीय महासचिव प्रियंका गांधी ने यूपी में नारा दिया लड़की हूं लड़ सकती हूं। पड़ोसी राज्य होने के नाते इसका असर उत्तराखंड में देखने को भी मिल रहा हूं। फिलहाल 78 महिलाओं ने अलग-अलग सीटों पर दावेदारी ठोंकी है। और अब पार्टी हाइकमान को तय करना है कि इनमें से कितनी लड़ सकती हैं।

कांग्रेस की महिला प्रदेश अध्यक्ष सरिता आर्य खुद नैनीताल सीट से दावेदार हैं। पिछले चुनाव में कांग्रेस ने आठ महिला उम्मीदवार उतारे थे, जिसमें से दो जीतने में कामयाब रहे। और पांच सीट पर दूसरे नंबर पर रही थीं। विधानसभा चुनाव को लेकर दावेदारी का आवेदन कांग्रेस में एक माह पहले हो चुका है। प्रदेश की 70 विधानसभा सीटों पर 478 लोगों ने दावेदारी ठोंकी हैं। इसमें 78 महिलाएं भी शामिल हैं, जिसमें से कई पूर्व में चुनाव भी लड़ चुकी है। अन्य संगठन के अलग-अलग पदों पर भी हैं। बात अगर पिछले चुनाव की करें तो पांच महिला उम्मीदवार चुनाव जीत विधानसभा में पहुंची थी। इसमें हल्द्वानी से कांग्रेस की कद्दावर नेता स्व. डा. इंदिरा हृदयेश और भगवानपुर से ममता राकेश शामिल थीं। वहीं भाजपा के टिकट पर यमकेश्वर से ऋतु खंडूड़ी, गंगोलीहाट से मीना गंगोला और सोमेश्वर से रेखा आर्य चुनावी जीती। वहीं, बाजपुर, चकराता, रुद्रप्रयाग, मसूरी और सल्ट में महिला उम्मीदवार दूसरे नंबर पर रही थी।

कांग्रेस ने हाईकमान को भेजी 35 प्रत्याशियों की पहली सूची, नौ मौजूदा विधायकों के टिकट कटेंगे

चंडीगढ़। फरवरी में होने वाले पंजाब विधानसभा चुनाव के लिए पंजाब कांग्रेस ने सर्वे रिपोर्ट के आधार पर 35 प्रत्याशियों के नाम की लिस्ट पार्टी हाईकमान को भेज दी है। इसकी पुष्टि पंजाब कांग्रेस के कार्यकारी अध्यक्ष पवन गोयल ने की है। प्रदेश कांग्रेस ने पहली लिस्ट जो कांग्रेस हाईकमान को भेजी है। इसके साथ उन 9 विधायकों के नाम भी भेजे गए हैं जिनकी 2022 चुनाव में टिकट काटे जाने का जिक्र किया गया है। इसके पीछे मुख्य कारण उक्त 9 विधायकों की सर्वे रिपोर्ट सही न आना बताया जा रहा है। आगामी कुछ दिनों में कांग्रेस अपने प्रत्याशियों की पहली सूची जारी करेगी। जिसमें 15 से 20 प्रत्याशियों के नाम शामिल होंगे। पवन गोयल ने बताया कि पंजाब विधानसभा चुनाव को लेकर कांग्रेस पार्टी ने केंद्रीय चुनाव समिति (सीईसी) की पहली बैठक बुलाई। गोयल ने बताया कि पार्टी की इस सीईसी बैठक से पहले उम्मीदवारों के नाम के चयन को लेकर मंथन हुआ है। बैठक में करीब 25 उम्मीदवारों के नामों पर चर्चा हुई।

बीजेपी का संपर्क अभियान शुरू

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

लखनऊ। चुनाव तारीखों के ऐलान के बाद भाजपा ने प्रदेश भर में टोली महासंपर्क अभियान शुरू कर दिया है। भाजपा प्रदेश अध्यक्ष स्वतंत्र देव सिंह ने बताया कि इस अभियान के तहत पार्टी के नेता और कार्यकर्ता कोरोना प्रोटोकॉल का पालन करते हुए घर-घर जा रहे हैं। लोगों को केंद्र व प्रदेश सरकार द्वारा किसानों, श्रमिकों, महिलाओं व युवाओं के लिए किए गए कार्यों की जानकारी दे रहे हैं।

साथ ही कार्यकर्ता यह भी बताएंगे कि प्रदेश की योगी सरकार ने कैसे अपराधियों पर नकेल कसी, कैसे बेघरों को आवास मुहैया कराया, घर-घर बिजली पानी पहुंचाने के लिए प्रयास किए और कैसे यूपी को रोजगार प्रदेश बनाने के साथ ही किसानों के जीवन को खुशहाल बनाया है। जनसंपर्क अभियान के तहत पार्टी कार्यकर्ता और नेता राज्य के 1,74,000 बूथों पर घर -घर जाएंगे। पांच -पांच व्यक्तियों का समूह बनाकर भाजपा कार्यकर्ता सभी 403 विधानसभा क्षेत्रों में सघन संपर्क अभियान चलाएंगे। पार्टी द्वारा पन्ना स्तर तक लोगों से संपर्क का कार्यक्रम बनाया गया है। संपर्क टोली लोगों को सरकार की उपलब्धियों को बताने वाले पंप्लेट पूरी हुई हर आस, घर-घर हुआ विकास भी देंगे। इस अभियान के तहत तीन श्रेणियों में कार्यकर्ता प्रवास करेंगे। इसमें महिला संपर्क, सामाजिक संपर्क और लाभार्थी संपर्क शामिल हैं। सभी 403 विधानसभा क्षेत्रों के अनुरूप टोलियां बनाई गई हैं। सभी टोलियों में चुनाव आयोग के निर्देशों के तहत अधिकतम 5 कार्यकर्ता होंगे।

भाजपा पर बरसे कन्हैया, बोले डबल इंजन सरकार फेल

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

नई दिल्ली। दो दिवसीय दौरे पर गोवा पहुंचे कांग्रेस के युवा नेता कन्हैया कुमार ने भाजपा पर जमकर हमला बोला है। कन्हैया ने कहा कि भाजपा का डबल इंजन युवाओं को रोजगार देने और बहुजन समाज के मसलों को हल करने में विफल रहा है। एक कार्यक्रम में उन्होंने कहा कि अगर बीजेपी का डबल इंजन ठीक से काम करता तो बिहार के युवा नौकरी की तलाश में गोवा में नहीं जाते।

उन्होंने सवाल उठाया कि बिहार और केंद्र में भी बीजेपी का शासन है, फिर ये दोनों इंजन फेल क्यों हो गए? उन्होंने यह भी कहा कि डबल इंजन गोवा में खनन को फिर से शुरू करने और युवाओं को रोजगार प्रदान करने में विफल रहा है। अपने संबोधन में कन्हैया कुमार ने कहा कि भाजपा यहां दस साल की सत्ता में सिर्फ विकास के नाम पर प्रचार कर रही है, और उसके लिए भी वह बिजली के खंभों पर करदाताओं के पैसे का बैनर लगा रही है। कोरोना को फैलने से रोकने के लिए लोग टैक्स चुकाने की जिम्मेदारी ले रहे हैं। लेकिन सरकार सिर्फ खोखला प्रचार कर रही है। भाजपा पर अपना हमला जारी रखते हुए कन्हैया ने यह भी कहा कि सरकार ने सार्वजनिक क्षेत्र को खत्म कर दिया है, जो बहुजन समाज के खिलाफ है।

उत्तराखंड : आम आदमी पार्टी की दूसरी सूची जारी

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

देहरादून। आम आदमी पार्टी ने उत्तराखंड चुनाव के लिए अपने उम्मीदवारों की दूसरी सूची जारी कर दी है। उत्तराखंड प्रभारी ने ट्वीट करके इसकी जानकारी दी है।

रायपुर विधानसभा से नवीन प्रिशाली को प्रत्याशी बनाया गया है। घाट आंदोलन के नेता गुड्डू लाल को थरली विधानसभा से प्रत्याशी बनाया गया है। अब तक आम आदमी पार्टी ने 42 प्रत्याशी घोषित किए हैं। दूसरी सूची में गुड्डू लाल थराली से, सुमंत तिवारी केदारनाथ, अमेंद्र बिष्ट धनौल्टी, नवीन पिरशाली रायपुर, रविन्द्र आनंद देहरादून कैंट, त्रिलोक सिंह नेगी टिहरी, राजू मौर्य डोईवाला, ममता सिंह ज्वालापुर, मनोरमा त्यागी खानपुर, गजेंद्र चौहान श्रीनगर, अरविंद वर्मा कोटद्वार, नारायण सुराड़ी धारचूला, प्रकाश चंद्र उपाध्याय द्वाराहाट, तारा दत्त पांडेय जागेश्वर, सागर पांडेय भीमताल, डॉ भुवन आर्य नैनीताल, जरनैल सिंह गदरपुर, कुलवन्त सिंह आदि लोगों के नाम शामिल हैं।

स्वामी, मुद्रक एवं प्रकाशक **बबिता चतुर्वेदी** के लिए **4पीएम** आस्था प्रिंटर्स, 5/600, विकास खण्ड, गोमती नगर, लखनऊ (यूपी) से मुद्रित एवं प्रकाशित। **प्रधान संपादक**- अर्चना दयाल, **संपादक** - संजय शर्मा, **स्थानीय संपादक** - सूर्यकांत त्रिपाठी*, **विधि सलाहकार**: सत्यप्रकाश श्रीवास्तव, मोहम्मद हैदर, **वित्तीय सलाहकार**: संदीप बंसल, **कार्टूनिस्ट**: हसन जैदी, **दूरभाष**: 0522- 4078371 | **Email**: daily4pm@gmail.com | **website**: www.4pm.co.in | **RNI-UPHIN/2015/62233** डाक पंजी. सं- SSP/LW/NP-495/2018-2020
*इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन हेतु पी.आर.बी. एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी। समस्त विवाद लखनऊ न्यायालय के अधीन ही होंगे।